आर. एन. आई. नं. : RAJHIN/2013/59711
पोस्टल रजि. नं. : बीकानेर/146/2021-23

प्रसार शिक्षा निदेशालय
राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय
बीकानेर

# पशु पालन नए आयाम

वर्ष : 9 अंक : 11 जुलाई, 2022 मूल्य : ₹2.00

।पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम्।

मार्गदर्शन : कुलपति प्रो. (डॉ.) सतीश के. गर्ग

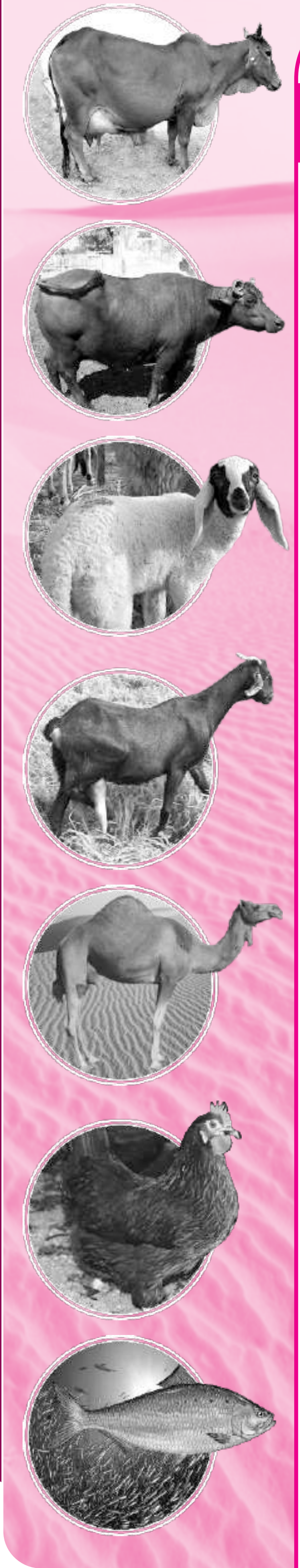

## कुलपति सन्देश

### पशुजन्य रोग: स्वस्थ भविष्य के लिए जागरूकता आवश्यक

प्रिय किसान एवं पशुपालक भाइयों एवं बहनो। राम–राम सा

आप सभी को जूनोटिक दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं। भारत एक कृषि प्रधान देश है, जहाँ पशुधन अपना विशेष महत्व रखता है तथा पशुपालन व्यवसाय को कृषि का एक सहयोगी उद्यम माना गया है। पशुपालन ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार का एक महत्वपूर्ण तथा लाभदायक एवं उत्तम स्त्रोत भी हैं। विशेष रूप से पशुपालन लघु एवं सीमान्त कृषकों एवं कृषि श्रमिकों को वर्षभर रोजगार प्रदान करता है। शहरी क्षेत्रों में बड़ी–बड़ी डेयरियों के अलावा अन्य पशु जैसे श्वान, बिल्ली व विभिन्न प्रकार के पक्षियों का पालन भी किया जा रहा है। पशुओं के विभिन्न रोग मनुष्यों में तथा मनुष्यों के विभिन्न रोग पशुओं में हो जाते हैं, इन्हें ही जूनोटिक बिमारियां कहा जाता है। मुख्य रूप से ये रोग बीमार पालतु पशुओं तथा जंगली पशुओं द्वारा फैलाये जाते हैं इसके अलावा छोटे–छोटे कीड़े–मकोड़े, मच्छर आदि भी इन रोगों को फैलाते हैं। जूनोटिक रोगों से प्रत्येक वर्ष लगभग 1 लाख 50 हजार करोड़ का नुकसान होता है। अतः पशुपालकों व पशुपालन व्यवसाय से जुड़े सम्बन्धित सभी को पशुओं के स्वास्थ्य के साथ–साथ अपने स्वास्थ्य का भी विशेष ध्यान रखना चाहिए। प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी 6 जुलाई को विश्व जूनोटिक दिवस मनाया जा रहा है, क्योंकि इसी दिन 1885 में लुई पाश्चर ने रेबीज के टीके की खोज की थी। इस दिवस को मनाने का प्रमुख उद्देश्य समाज के सभी प्राणियों तथा पशुपालकों में जूनोटिक रोगों के प्रति जागरूकता फैलाना है। वर्तमान में फैली हुई वैश्विक महामारी कोरोना को भी प्रारम्भिक स्तर पर चमगादड़ से मनुष्यों में फैलने वाले रोग के तौर पर देखा जा रहा है। विश्व में होने वाले प्रमुख जूनोटिक रोग–रेबीज, ब्रुसेलोसिस, स्वाइन फ्लू, बर्ड–फ्लू, इबोला, निपाह, मंकी–पॉक्स, ग्लैण्डर्स, सालमोनेलोसिस आदि हैं। जूनोटिक रोग होने के प्रमुख कारण पशु प्रोटीन की बढ़ती मांग, गहन व अस्थिर खेती, वन्य जीवों का बढ़ता उपयोग व शोषण, प्रकृति के साथ वेबजह खिलवाड़, जंगलो में आवाजाही व स्वच्छता को न अपनाना है। इन जूनोटिक रोगों से बचाव हेतु आमजन में जागरूकता का होना बहुत आवश्यक है। इन रोगों की रोकथाम हेतु पशुओं को समय पर टीकाकरण ही सही उपचार है। पशुजन्य रोगों (जूनोटिक रोग) के प्रभावी नियंत्रण हेतु एक स्वास्थ्य–एक संकल्पना पर कार्य करना, जूनोटिक रोगों पर अनुसंधान को बढ़ावा देना, जागरूकता कार्यक्रम आयोजित करना, खाद्य सुरक्षा को बढ़ाने के लिए वैकल्पिक उपायों को विकसित करने आदि पर ध्यान देने की आवश्यकता है।

प्रो. (डॉ.) सतीश कुमार गर्ग

**किसी देश की महानता का आंकलन इस बात से किया जा सकता है कि लोग पशुओं से कैसा व्यवहार करते हैं।**

–महात्मा गांधी

# विश्वविद्यालय समाचार

## कुलपति प्रो. सतीश कुमार गर्ग को लाईफ टाईम एचिवमेंट अवार्ड

वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग को पशुचिकित्सा शिक्षा व अनुसंधान में उनके द्वारा किए गये उत्कृष्ट कार्यों और पशुपालन में योगदान के लिए लाईफ टाईम एचिवमेंट अवार्ड प्रदान किया गया। उत्तरबंगा कृषि विश्वविद्यालय, पश्चिम बंगाल द्वारा "सतत् विकास के लिए कृषि जैविक और व्यवहारिक विज्ञान में वर्तमान मुद्दे" विषय पर 11 से 13 जून को आयोजित छठे अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में प्रो. गर्ग को यह पुरस्कार प्रदान किया गया। इस अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन के उद्घाटन सत्र में कुलपति प्रो. गर्ग मुख्य अतिथि के रूप में आंमत्रित भी रहे। पशुचिकित्सा शिक्षा और अनुसंधान क्षेत्र में प्रो. गर्ग ने तीन दशक से अधिक अध्ययन–अध्यापन एवं शोध में उत्कृष्ट कार्य किया। कुलपति प्रो. गर्ग वेटरनरी विश्वविद्यालय में कुलपति पद पर कार्य करते हुए एक कुशल प्रशासक, शिक्षाविद् और अनुसंधानवेत्ता के रूप में नेतृत्व प्रदान कर रहें हैं।

## आठवीं अनुसंधान परिषद् की बैठक का आयोजन

### अनुसंधान का लाभ तकनीक के रूप में पशुपालकों तक पहुँचें: कुलपति प्रो. गर्ग

वेटरनरी विश्वविद्यालय की अनुसंधान परिषद् की आठवीं बैठक 17 जून को कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग की अध्यक्षता में आयोजित की गई। बैठक को संबोधित करते हुए कुलपति प्रो. गर्ग ने कहा कि विश्वविद्यालय में अनुसंधान कार्य एक योजनाबद्ध तरीके से पशुपालकों एवं किसानों की आवश्यकताओं को पूरा किये जाने के उद्देश्य से किये जा रहें हैं। पशु अनुसंधान केन्द्रों, एडवांस अनुसंधान केन्द्रों एवं विभिन्न विभागों में जारी अनुसंधान का लाभ तकनीकों के रूप में पशुपालकों तक पहुँचें ताकि उनको आर्थिक लाभ मिल सके। बैठक में विश्वविद्यालय द्वारा विभिन्न अनुसंधानों में विकसित तकनीकों को मान्यकरण के बाद पेटेंट हेतु भेजने, पशु फार्मों पर पशु उत्पादों का मूल्य संवर्धन करने आदि मुद्दों पर सुझाव एवं दिशा निर्देश दिये गये। विश्वविद्यालय के पशुधन अनुसंधान केन्द्रों के प्रभारी अधिकारियों एवं एडवांस्ड अनुसंधान केन्द्रों के प्रमुख अन्वेषकों ने प्रगति प्रतिवेदन प्रस्तुत किये। अनुसंधान निदेशक प्रो. हेमन्त दाधीच ने परिषद् की बैठक का संचालन करते हुए प्रगति विवरण प्रस्तुत किया।

## यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पोंसिबिलिटी

### गांव गाढ़वाला में जल संरक्षण जागरूकता रैली का आयोजन

पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर की राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई के द्वारा वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा गोद लिए गए गांव गाढ़वाला में 28 जून को जल संरक्षण जागरूकता रैली का आयोजन किया गया। समन्वयक, यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पांसिबिलिटी डॉ. नीरज कुमार शर्मा ने बताया कि जल मनुष्य के रोजमर्रा जीवन के साथ साथ कृषि एवं पशुपालन में भी बहुत महत्व रखता है अतः हमें जल की उपयोगिता एवं उपलब्धता को ध्यान में रखते हुए इसके समुचित उपयोग को समझना होगा। गांव में वर्षा जल संरक्षण करके भविष्य में इसका उपयोग कर सकते हैं। गांव के मुख्य मार्गों से रैली निकाल कर ग्रामीणों को जल संरक्षण के बारे में जागरूक किया गया। रैली में राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयं सेवकों ने सक्रिय भागीदारी निभाई। राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, गाड़वाल के प्रधानाचार्य श्रवण चौधरी ने रैली का शुभारंभ किया।

## आठवीं प्रसार शिक्षा परिषद् की बैठक का आयोजन

## पशुपालकों के लिए उद्यमिता प्रेरक प्रशिक्षण आयोजित किये जाये : कुलपति प्रो. गर्ग

वेटरनरी विश्वविद्यालय की प्रसार शिक्षा परिषद् की 8वीं बैठक 29 जून को कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग की अध्यक्षता में आयोजित की गई। बैठक को सम्बोधित करते हुए कुलपति, प्रो. गर्ग ने कहा कि वेटरनरी विश्वविद्यालय के अर्न्तगत विभिन्न जिलों में स्थापित पशुविज्ञान केन्द्रों एवं नोहर (हनुमानगढ़) स्थित कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा राज्य के पशुपालकों के उन्नत पशुपालन विधियों का प्रशिक्षण, रोग निदान सेवाएं, सलाहकारी सेवाएं एवं कृषक गोष्ठियों के माध्यम से पशुपालन उत्पादन बढ़ाने एवं आर्थिक स्वावलम्बन हेतु प्रेरित किया जा रहा है। कुलपति ने बताया कि राज्य में 50 प्रतिशत से अधिक लोगों का जीवनयापन पशुपालन आधारित व्यवसाय पर है तथा देश का 10 प्रतिशत पशुधन राजस्थान राज्य में है। अकाल एवं अन्य विपरित परिस्थियों में भी राज्य के कृषकों का जीवनयापन पशुपालन का विशेष महत्व है। राज्य में पशुपालन की महत्वता को देखते हुए किसानों एवं पशुपालकों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए नवीन तकनीकों के हस्तातरण एवं वैज्ञानिक पशु प्रबन्धन प्रशिक्षणों को अंजाम देना होगा। पशुपालकों के आर्थिक उन्नयन हेतु लघु एवं दीर्घ प्रशिक्षण प्रदान कर उन्हें उद्यमिता हेतु प्रेरित करना होगा। पशुपालकों के लिए उद्यमिता प्रेरक प्रशिक्षण आयोजित किये जाने चाहिए। प्रो. गर्ग ने पशुविज्ञान केन्द्रों के माध्यम से पशुपालकों हेतु चलाई जा रही गतिविधियों को आकंलन करने एवं उनका आर्थिक प्रभाव जानने हेतु सुझाव दिये। प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने वर्ष 2020–21 एवं 2021–22 का प्रगति प्रतिवेदन प्रस्तुत करते हुए सभी केन्द्रों द्वारा संचालित गतिविधियों को विस्तृत रूप से बताया। वेटरनरी विश्वविद्यालय, हिसार के प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो. डी.एस. दैया ने प्रशिक्षणों हेतु नाबार्ड एवं अन्य वित्तपोषित संस्थानों से सहयोग का सुझाव दिया। बैठक में परिषद् के मनोनीत सदस्य डॉ. दिनेश भौंसले (पुणे), उरमूल डेयरी के महाप्रबंधक प्रतिनिधि डॉ. बी.एल. विश्नोई, उपनिदेशक, पशुपालन विभाग डॉ. ओम प्रकाश ने भी अपने विचार रखे। बैठक में विश्वविद्यालय के वित्तनियंत्रक डॉ. प्रताप सिंह पूनिया, अधिष्ठाता एवं संकाय अध्यक्ष प्रो. आर.के. सिंह, डीन–डॉयरेक्टर, विभागाध्यक्ष एवं कृषि विज्ञान केन्द्र एवं पशुविज्ञान केन्द्रों के प्रभारी अधिकारी उपस्थित रहे।

## राजुवास ई-पशुपालक चौपाल का आयोजन

## देशी गायों से अधिक उत्पादन हेतु महत्वपूर्ण बातें: प्रगतिशील पशुपालक श्री सुरेन्द्र अवाना की जुबानी

वेटरनरी विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा राज्य स्तरीय ई–पशुपालक चौपाल 8 जून को आयोजित की गई। देशी गायों से अधिक उत्पादन कैसे प्राप्त करें विषय पर प्रगतिशील किसान एवं पशुपालक श्री सुरेन्द्र जी अवाना ने पशुपालकों से वार्ता की। निदेशक प्रसार शिक्षा प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने विषय प्रवर्तन करते हुए बताया कि देश में 193 मिलियन गौवंश है जिसमें से 13.9 मिलियन गौवंश के साथ राजस्थान छठे स्थान पर है। भारत में कुल 37 प्रकार की गायों की नस्लें हैं जिसमें से 6 प्रकार की देशी गौवंश गिर, साहीवाल, थारपारकर, राठी, मालवी एवं कांकरेज राजस्थान के अलग–अलग जिलों में पाई एवं पाली जाती है। आमंत्रित विशेषज्ञ श्री सुरेन्द्र अवाना, प्रगतिशील किसान एवं पशुपालक, भैराना, जयपुर ने चौपाल के माध्यम से खेती एवं पशुपालन क्षेत्र में अपने अनुभव साझा करते हुए पशुपालकों को देशी गायों से अधिक उत्पादन लेने हेतु महत्वपूर्ण बिन्दुओं पर चर्चा की। उन्होंने बताया कि पशुपालन एवं खेती से पूर्ण लाभ लेना है तो हमें एकीकृत कृषि प्रणाली को अपनाना होगा। जिसमें कृषि उत्पाद को पशुओं के खाद्य के रूप में उपयोग किया जाता है एवं पशु उत्पादों को खेती में काम ले सकते हैं। इससे पशु चारे एवं खेती में खाद्य की समस्या का समाधान हो जाता है देशी गायों के मूत्र एवं गोबर को जैविक खाद के रूप में उपयोग करने से भूमि की उर्वरता बढ़ती है, उत्पादन बढ़ता है एवं हानिकारक रसायनों के प्रभाव से भी मनुष्य बच सकता है। अलग–अलग जिलों में उपलब्धता के आधार पर देशी गायों को चयन कर सकते है। जहां तक संभव हो पशुचारे को अपने खेत में ही उगाये एवं बहुगर्षीय चारा फसलों को पशुचारे में उपयोग कर सकते है। पशुओं को अलग–अलग अवस्थाओं में चारे एवं बांटे को संतुलित रूप से प्रदान करना चाहिए। देशी गायों में रोग प्रतिरोधक क्षमता अधिक होती है तथा राजस्थान की गर्म जलवायु में भी कम प्रबन्धन लागत में इनकों पाला जा सकता है। गायों में उचित नस्ल चुनाव, समय पर प्रजनन, संतुलित खाद्य प्रबन्ध को अपनाकर पशुपालक भाई पशुपालन से अधिक आर्थिक लाभ पा सकते हैं।

# पशुपालक प्रशिक्षण समाचार

## पशु विज्ञान केन्द्र, रतनगढ़ ( चूरू )

पशु विज्ञान केन्द्र, रतनगढ़ द्वारा 6, 10, 14, 18, 22 एवं 27 जून को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 220 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

## पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ ( श्रीगंगानगर )

पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ द्वारा 14, 17 एवं 21 जून को आयोजित एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविर एवं 1 तथा 24 जून को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय प्रशिक्षण शिविरों में 185 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

## पशु विज्ञान केन्द्र, बाकलिया ( नागौर )

पशु विज्ञान केन्द्र, बाकलिया–लाड़नू द्वारा 6, 13, 18 एवं 24 जून को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरो का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 86 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

## पशु विज्ञान केन्द्र, कुम्हेर ( भरतपुर )

पशु विज्ञान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर) द्वारा दिनांक 6, 9 एवं 13 जून को गांव शैत, पल्ला एवं नगला जोधसिंह में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में 67 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

## पशु विज्ञान केन्द्र, टोंक

पशु विज्ञान केन्द्र, टोंक द्वारा 4, 7, 13, 17, 21 एवं 25 जून को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 180 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

## पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर ( बीकानेर )

पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर (बीकानेर) द्वारा 7, 10, 14, 17 एवं 21 जून को ऑनलाइन एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 211 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

## पशु विज्ञान केन्द्र, कोटा

पशु विज्ञान केन्द्र, कोटा द्वारा 10, 13, 22, 24 एवं 27 जून को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 116 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

## पशु विज्ञान केन्द्र, बोजुन्दा ( चित्तौड़गढ़ )

पशु विज्ञान केन्द्र, बोजुन्दा (चित्तौड़गढ़) द्वारा 3, 10, 17 एवं 25 जून को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 68 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

## पशु विज्ञान केन्द्र, जोधपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, जोधपुर द्वारा दिनांक 7, 9 एवं 13 जून को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 87 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

## पशु विज्ञान केन्द्र, झुंझुनूं

पशु विज्ञान केन्द्र, झुंझुनूं द्वारा 6, 9, 11, 15, 18, 21 एवं 23 जून को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों से 200 पशुपालक एवं कृषक लाभान्वित हुए।

## पशु विज्ञान केन्द्र, धौलपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, धौलपुर द्वारा दिनांक 10, 13, 23, 25 एवं 27 जून को गांव ड्योली, अतरोली, जाटोली, बडचोली एवं बकायन गांवो में तथा दिनांक 20 एवं 28 जून को केन्द्र परिसर में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में कुल 208 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

## पशु विज्ञान केन्द्र, डूंगरपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, डूंगरपुर द्वारा 7, 9, 10 एवं 13 जून को गांव मुकरवाडा, सुदंरपुर, मांडवा एवं नवागरा गांवों में एक दिवसीय प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन प्रशिक्षण शिविरों से 119 पशुपालक एवं कृषक लाभान्वित हुए।

## पशु विज्ञान केन्द्र, सिरोही

पशु विज्ञान केन्द्र, सिरोही द्वारा 9, 13, 15, 17, 20 एवं 22 जून को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों से 116 पशुपालक एवं कृषक लाभान्वित हुए।

## पशु विज्ञान केन्द्र, जोबनेर

पशु विज्ञान केन्द्र, जोबनेर द्वारा 9, 15, 16, 25 एवं 27 जून को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 88 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

## पशु विज्ञान केन्द्र, नोहर ( हनुमानगढ़ )

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर जिला हनुमानगढ़ द्वारा दिनांक 13, 17, 21 एवं 29 जून को गांव जोधासर, खोडा, दुलजाना एवं उजलवास में एक दिवसीय कृषक पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 184 किसानों एवं पशुपालकों ने भाग लिया।

# जैविक खेती का पर्याय वर्मीकम्पोस्ट

केंचुए के मल से तैयार की गई खाद वर्मी कम्पोस्ट कहलाती है। यह पोषण पदार्थो से भरपूर एक उत्तम जैव उर्वरक है इसमें कूड़ा, कचरा व गोबर को केंचुओ और सूक्ष्म जीवों की सहायता से उपजाऊ खाद में बदला जाता है, जिसको वर्मी कम्पोस्टिंग कहते है।

**आवश्यक सामग्री–** गोबर की खाद 10–15 दिन पुरानी हो। कृषि अवशेष जैसे पत्तियाँ, भूसा अवशेष, सड़ी–गली सब्जियां, फल आदि का उपयोग वर्मीकम्पोस्ट बनाने में किया जा सकता है।

**स्थान का चुनावः–** केंचुआ खाद बनाने के लिए ऐसे स्थान का चुनाव करते हैं जो ऊंचा व छायादार हो, छाया नहीं होने की स्थिति में वर्मी बेड के उपर छप्पर डालकर छाया करनी चाहिए क्योंकि केंचुओ को अधिक प्रकाश की आवश्यकता नहीं होती है। केंचुए अंधेरे में अधिक क्रियाशील रहते हैं। केंचुआ खाद बनाने के लिए 25–30 डिग्री सेल्सियय तापमान तथा 30 प्रतिशत नमी होनी चाहिए।

**वर्मीकम्पोस्ट बनाने की विधिः–** केंचुआ खाद बनाने के लिए जमीन में खड्ढा खोदकर या ईट सीमेंट का पक्का ढांचा तैयार कर लेते हैं जिसमें साल भर पर्याप्त खाद बना सकते हैं। एक एकड़ जमीन के लिए खड्ढे की चौड़ाई 3–4 फिट, गहराई 1–2 फिट तथा लम्बाई 5–6 फिट होनी चाहिए। सबसे पहले 3–4 ईंच मोटी फसल अवशेष की परत खड्ढे में बिछा देते हैं इसके बाद उसमें 10–15 दिन पुराना गोबर जिसकी गर्मी निकल कर ठण्डा हो गया हो वो बिछा देते हैं इसमें उपयुक्त नमी बनाये रखने के लिए पानी का छिड़काव कर देते हैं तथा 2–3 दिन बाद लगभग 10,000 केंचुए उसमें डाल देते हैं फिर उसके उपर 7–8 ईंच पत्तियों की परत बिछा देते हैं इसे जूट के बोरों से ढक दिया जाता है। यह अंधेरे या छाया में होना चाहिए क्योकि केंचुए इस स्थिति में अधिक सक्रिय होते हैं। यह समस्त क्रिया 45–50 दिन पश्चात पूरी हो जाती है इसके पश्चात बोरों को हटाने पर ऊपर की खाद् सूख जाती है तथा वर्मी कम्पोस्ट तैयार हो जाती है इसे अलग कर लेते हैं।

**वर्मीकम्पोस्ट की उपयागिताः–** वर्मी कम्पोस्ट में अन्य गोबर खाद की तुलना में नाइट्रोजन पांच गुना, फास्फोरस 6 गुना, पोटास 2–205 गुना तथा जिंक 3 गुना अधिक होता है जो फसल के लिए अधिक उपयोगी होती है।

- केंचुए खाद से भूमि की गुणवत्ता में सुधार होता है भूमि की जलधारण क्षमता बढ़ जाती है तथा यह भूमि का उपयुक्त तापक्रम बनाये रखने में सहायक होती है।
- पर्यावरण की दृष्टि से भूमि के जल स्तर में वृद्वि होती है।
- भूमि में उपयोगी जीवाणुओं की संख्या में वृद्धि करती है तथा भूमि की उर्वरकता बढ़ाने में उपयोगी होती है।
- वर्मी कम्पोस्ट में एक्टीनोमाइसीटीज की मांग देशी खाद्य की तुलना में 8 गुना अधिक होने से यह फसलों में रोग प्रतिरोधता बढ़ाती है। खेत में हूमस की मांग बढ़ती है।
- केंचुए ऑक्जिन, साइटोकाइनिन नामक हार्मोन का स्त्राव करते है जो पौद्यो की वृद्धि व उसकी रोग प्रतिरोधी क्षमता बढ़ाता है।

**वर्मीकम्पोस्ट की फसलों के लिए पर्याप्त मांगः–** केंचुआ खाद की केवल 2 टन मांग प्रति हैक्टर भूमि के लिए पर्याप्त होती है। खाद्यान फसलों में 5–6 टन प्रति हैक्टर की दर से प्रयोग कर सकते है। सब्जियों के लिए 10–12 टन प्रति हैक्टर की दर से प्रयोग कर सकते है तथा वर्मीकम्पोस्ट का उपयोग किसान बुवाई के समय भी कर सकते है।

**डॉ. प्यारेलाल, डॉ. संजयसिंह एवं डॉ. नरेन्द्रसिंह राठौड़**
**वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर**

## सर्वाधिक सम्भावित पशु रोग पूर्वानुमान–जुलाई, 2022

| पशु रोग | पशु | अत्यधिक संभावना | अधिक संभावना | मध्यम संभावना | बहुत कम संभावना |
|---|---|---|---|---|---|
| बबेसिओसिस | गाय | – | – | – | बांसवाड़ा, गंगानगर, हनुमानगढ़ |
| ब्लू टंग रोग | भेड़ | – | – | – | बाड़मेर, भीलवाड़ा, चूरू, दौसा धौलपुर |
| खुरपका–मुंहपका रोग | गाय, भैंस, भेड़, बकरी, ऊंट | गंगानगर | जयपुर | – | भरतपुर, बीकानेर, धौलपुर, हनुमानगढ़, सीकर |
| गलघोंटू रोग | गाय, भैंस | – | – | सीकर | भीलवाड़ा, बीकानेर, बूंदी, चूरू, दौसा, डूंगरपुर, गंगानगर, हनुमानगढ़, जालोर, झालावाड़, झुंझुनू, जोधपुर, नागौर, पाली, राजसमंद, सवाई माधोपुर, उदयपुर |
| पी.पी.आर. | बकरी | चूरू | – | बाड़मेर, जोधपुर | भीलवाड़ा, गंगानगर, झालावाड़, प्रतापगढ़, सीकर, उदयपुर |
| ट्रीपनोसोमियोसिस | ऊंट, गाय, भैंस | अलवर, उदयपुर | – | – | – |

**विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें – प्रो. आर.के. सिंह, अधिष्ठाता, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर, एवं डॉ. जे.पी. कच्छावा, प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर। फोन नं. 0151-2543419, 2544243, 2201183 टोल फ्री नम्बर 18001806224**

# बारिश में पशुओं को रोगों से बचाएं

बारिश का मौसम प्रकृति के सभी जीव जंतुओं की वृद्धि के लिए अनुकूलतम होता है। पालतू पशु भी इस मौसम में अपनी अधिकतम दक्षता से वृद्धि करते हैं और दुधारू पशुओं से पशुपालक उच्चतम उत्पादन प्राप्त कर सकते हैं जब तक कि पशु किसी रोग से ग्रसित ना हो। क्योंकि बारिश के मौसम में पशुओं के रोग ग्रस्त होने की संभावना कई गुना बढ़ जाती है। बारिश के दौरान अनेक जीवाणु, विषाणु और रोग कारक सक्रिय हो जाते हैं इसलिए ये आवश्यक है कि पशुपालक इस मौसम में पशुओं की स्वास्थ्य रक्षा पर ध्यान देवें।

**बारिश के मौसम में पशुओं को होने वाले प्रमुख रोगः**

**गलघोटूः** यह रोग पशुओं में बारिश के दौरान फैलता है। यह रोग संक्रमित पशु के मल, मूत्र व स्राव से दूषित भोजन व पानी के माध्यम से स्वस्थ पशुओं मे फैल जाता है। इस रोग में पशुओं को एकाएक तेज बुखार आता है, दूध उत्पादन में कमी आ जाती है, नाक का बहना, लार गिरना, गले में सूजन, सांस लेने में परेशानी आदि इस रोग के अन्य लक्षण है। संक्रमित पशुओं को स्वस्थ पशुओं से अलग करें व पशुचिकित्सक की सलाह से उचित इलाज करवाएँ। इस रोग से बचाव हेतु 3 महीने और इससे अधिक उम्र के सभी पशुओं को टीका लगवाए तथा वर्ष में एक बार टीकाकरण अवश्य करवाएं।

**मुंहपका खुरपका रोगः** बारिश के दौरान गाय भैंस में फैलने वाली छूतदार बीमारी है जो विषाणु जनित है। यह रोग इतना संक्रामक है कि यदि किसी गांव में एक भी पशु इस रोग से ग्रसित हो जाता है तो उस गांव के सभी पशु इस रोग से प्रभावित हो जाते हैं। इस रोग में पशुओं के मुंह, जीभ और खुरों में छाले पड़ जाते हैं, पशु खाना पीना बंद कर देता है, मुंह से अत्यधिक लार का स्राव, हल्का बुखार आदि इस रोग के प्रमुख लक्षण हैं। संक्रमित पशु के घावों को लाल दवा के हल्के घोल से धोना चाहिए तथा बोरिक अम्ल–ग्लिसरीन का लेप लगाना चाहिए। पशु चिकित्सक की सलाह से उचित उपचार करवाएँ। इस रोग से बचाव हेतु 3 माह से ऊपर के सभी पशुओं का टीकाकरण करवाएं तथा वर्ष में दो बार टीकाकरण अवश्य करवाएं। पहला टीका बरसात के मौसम के आसपास तथा दूसरा टीका शीत ऋतु के महीनों में लगवाएं।

**लंगड़ा बुखारः** यह रोग 6 से 18 माह के बछड़ों एवं बैलों को अधिक प्रभावित करता है। यह रोग त्वचा के घाव में संक्रमण तथा दूषित आहार व पानी के द्वारा फैलता है। इस रोग में पशु की मांसपेशियों वाले भाग जैसे अगले कंधे व पिछले पुट्ठे पर सूजन आ जाती है। सूजन वाली जगह कड़क, गर्म, दर्द युक्त व गैस से भर जाती है। इस रोग में पशु लंगड़ा कर चलने लगता है, उसे तेज बुखार आता है। इस रोग से बचाव हेतु मानसून के समय बी.क्यू का टीका 3 माह से अधिक उम्र के सभी स्वस्थ पशुओं को लगाना चाहिए।

**खुर का सड़नाः** यह एक संक्रामक बीमारी है जो मुख्यतः भेड़ों में होती है। यह रोग बकरियों व गायों को भी प्रभावित करती है। यह रोग पशु को दलदली, गीले एवं गंदे स्थान पर बांधने से फैलती है। इस रोग में पशु के खुर सड़ने लग जाते हैं। इस रोग का मुख्य कारण पशु के पैर में चोट लगना व चोट लगे स्थान पर संक्रामक जीवाणुओं का प्रवेश कर जाना है। रोग के प्रारंभ में खुर के मध्य भाग में सूजन व रूखापन आ जाता है और पशु लंगड़ा कर चलने लगता है। पशु के खुर से दुर्गंध भरा स्राव निकलने लग जाता है। काफी गंभीर स्थिति में पशु का खुर टूटकर अलग भी हो जाता है। ईलाज हेतु संक्रमित खुर को लाल दवा या पोविडिन आयोडीन से साफ करना चाहिए। पशुचिकित्सक की सलाह से पशु को एंटीबायोटिक दवा देनी चाहिए। इस रोग से बचाव हेतु पशु को सदैव साफ एवं सूखी जगह पर बांधना चाहिए

**डॉ. मंगेश कुमार, डॉ. मुकेश कुमार गुर्जर एवं डॉ. मुकेश कुमावत,** राजुवास, बीकानेर

# पशुजन्य रोगों से पशुपालक सावधानी बरतें

पशुजन्य रोग ऐसे रोग होते है जो पशुओं से मनुष्यों में फैलते है इन्हें जूनोसिस या जूनोटिक रोग के नाम से भी जाना जाता है। पशुजन्य रोग मुख्यतः जीवाणुओं, विषाणुओं, कवक व प्रोटोजोआ कारको के कारण होते हैं। पशुजन्य रोगों का खतरा गर्भवती महिलाओं, अधिक उम्र के लोगों, छोटे बच्चों, एच.आई.वी. व कैंसर पीड़ित तथा कमजोर रोग प्रतिरोधक क्षमता वाले लोगों ज्यादा रहता है। इन लोगों में अधिक गंभीर प्रतिक्रियाएं और लक्षण भी पैदा हो सकते हैं।

पशुजन्य रोग पशुओं से मनुष्यों में निम्न तरीको से फैल सकते है।

संक्रमित पशु या संक्रमित पशुओं द्वारा दूषित सामग्री के सम्पर्क में आने से, हवा के माध्यम से संक्रमित पशु की लार, खून, पेशाब या शरीर के अन्य तरल पदार्थो से दूषित आहार और पानी के अंतर्ग्रहण से, जिन स्थानों पर संक्रमित पशुओं की आवाजाही रहती है ऐसे स्थानों के सम्पर्क में आने से, बाह्य परजीवियों जैसे मच्छर, चिंचड़ आदि के काटने से तथा दूषित अधपके मांस, अण्डे, फल और सब्जियों के सेवन से फैलता है।

संक्रामक रोगो में लगभग 200 से अधिक ऐसे रोग है जो पशुजन्य है, इनमें से कुछ प्रमुख रोग निम्न है–

**रेबीजः** रेबीज एक संक्रामक रोग है जो कि श्वानों द्वारा मनुष्यों में फैलता है तथा यह विषाणुजनित रोग है, यह विषाणु संक्रमित श्वान की लार में होते हैं तथा श्वान के काटने पर मनुष्यों में लक्षण प्रकट होते है। रेबीज का बचाव ही इसका उपचार है। मनुष्यों में इसके लक्षण अनिद्रा, चिंता, उलझन, मस्तिक के विकार व पानी से भय है।

**बर्ड फ्लूः** इस रोग के विषाणु का संचरण पक्षियों द्वारा मनुष्यों में तथा मनुष्यों द्वारा पक्षियों में संभव है। मनुष्यों में इस रोग के प्रमुख लक्षण खॉसी, सर्दी, जुकाम, आँखों से निरंतर पानी गिरना, सांस लेने में परेशानी, शरीर में ऐंठन तथा ज्वर आदि प्रमुख हैं।

**स्वाइन फ्लूः** इस विषाणुजनित रोग का संचरण मुख्यतः वायु के द्वारा होता है। सूअर के संक्रमित मांस के सेवन से इस रोग के प्रसार की सम्भावना रहती है। मनुष्यों में इस रोग के प्रमुख लक्षणों में खॉसी, सर्दी, जुकाम, आँखों में पानी गिरना, सांस लेने में परेशानी, शरीर में ऐंठन तथा ज्वर आदि प्रमुख हैं।

**एन्थ्रेक्सः** यह एक घातक जीवाणुजनित रोग है जिसे तिल्ली बुखार के नाम से भी जाना जाता है। यह रोग पशुपालकों, ऊन का कार्य करने वालों तथा भेंड़पालकों में अधिक होता है। इस रोग से पीड़ित मनुष्यों में हाथ, सिर तथा गर्दन की त्वचा, फेफड़ों व आंतों में घाव हो जाते है।

**तपेदिकः** यह एक जीवाणु के द्वारा फैलने वाला दीर्घकालिक रोग है जिसे टी.बी., क्षय रोग भी कहते है। पशुओं का क्षय रोग मनुष्यों में दूषित दूध तथा दुग्ध उत्पादों द्वारा फैलता है। इस रोग से प्रभावित रोगी में सामान्यतः शारीरिक दुर्बलता ,थकान, सुस्ती, हल्का ज्वर, शरीर में दर्द, रात्रि में पसीना आना आदि लक्षण प्रकट होते हैं।

**ब्रुसेलोसिसः** रोगी पशुओं के संपर्क में आए मनुष्यों में यह रोग जीवाणु संक्रमण के कारण होता है जिसमें पीड़ित व्यक्ति में हल्का अंडुलंट ज्वर, गर्भपात, बाँझपन, जोड़ों में दर्द, रात्रि में पसीना, वृषण में सूजन, कमजोरी, पीठ तथा गर्दन में दर्द आदि लक्षण पैदा हो जाते हैं।

**लेप्टोस्पाईरोसिसः** यह रोग लेप्टोस्पाईरा प्रजाति के जीवाणुओं तथा उनकी उपप्रजातियों द्वारा पशुशाला सफाई कर्मचारियों को हो जाता है। पीड़ित मनुष्यों में पीलिया, रक्तस्राव तथा तीव्र ज्वर आदि लक्षण प्रकट होते हैं।

**पशुजन्य रोगों से बचावः**

पशुजन्य रोगों की रोकथाम के लिए पशुपालकों को निम्न सावधानियां रखनी चाहिए–

- ❖ पशु तथा मनुष्यों के आवासीय स्वच्छता पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।
- ❖ पशुशाला से खाद्य अवशेषों, मल–मूत्र का समुचित निस्तारण आवश्यक है।
- ❖ आवारा पशुओं का आवागमन पशुशाला में नियंत्रित करना चाहिये।
- ❖ पर्याप्त मात्रा में व्यक्तिगत निरोधी वस्तुओं यथा दस्ताने, चश्मे तथा मास्क की पशुपालन तथा पशुचिकित्सा से जुड़े व्यक्तियों के पास उपलब्धता होनी चाहिये।
- ❖ अपास्चुरिकृत दूध तथा दुग्ध पदार्थों, कच्चे मांस व अंडे का उपयोग नहीं करना चाहिये।
- ❖ रोगी पशुओं को स्वस्थ पशुओं से पृथक रखना चाहिये।
- ❖ नये पशुओं को पर्याप्त संगरोध के पश्चात ही झुंड में मिलाना चाहिये।
- ❖ पशुओं को संक्रामक बीमारियों से बचाने के लिए पशुचिकित्सक की सलाहानुसार टीकाकरण करवाना चाहिए।
- ❖ स्वस्थ पशुओं को बीमारी घोषित वाले क्षेत्रों में ना ले जाएं।
- ❖ संक्रमित पशु की मृत्यु होने के उपरांत पशु एवं उसकी बिछावन एवं अन्य संपर्क की वस्तुओं का उचित निस्तारण करें।
- ❖ बीमार पशुओं को मेला, हाट आदि स्थानों पर न ले जाए।

**डॉ. दीपिका धूड़िया**
सहायक प्राध्यापक, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर

## पशुओं में ब्रुसेलोसिस रोग निदान, उपचार व रोकथाम

ब्रुसेलोसिस एक संक्रामक रोग है जो ''ब्रुसेला'' बैक्टीरिया के कारण होता है। ब्रुसेलोसिस रोग गाय, भैंस, भेड़, बकरी, सूअर एवं श्वानों में फैलने वाले रोग हैं जो पशुओं से मनुष्यों में फैलता है जिसे मेडिटेरेनियन ज्वर, अंडुलेट ज्वर और माल्टा ज्वर भी कहते हैं। इस रोग से ग्रस्त पशुओं में 7–9 महीने के गर्भकाल में गर्भपात हो जाता है जिससे सर्वाधिक पशुपालकों को नुकसान होता है। ये रोग मनुष्यों के स्वास्थ्य एवं आर्थिक दृष्टिकोण से बेहद घातक है।

**रोग का कारण–** ब्रुसेलोसिस ''ब्रुसेला'' नामक जीवाणु से होता है। गाय, भैंस में ये रोग ब्रुसेला एबोरटस तथा भेड़ एवं बकरी में ये ब्रुसेला मेलीटेन्सिस से होता है। पशुओं में ये रोग संक्रमित पदार्थ के खाने से, जननांगों के स्त्राव से, योनि स्त्राव से, संक्रमित चारे के उपयोग या संक्रमित कृत्रिम गर्भाधान द्वारा फैलता है। रोगी पशु का कच्चा दूध पीने से, कई बार गर्भपात होने पर पशुचिकित्सक या पशुपालक असावधानी पूर्व जेर (प्लासेंटा) या गर्भाशय के स्त्राव को छूते हैं जिससे जीवाणु त्वचा के किसी कटाव या घाव से भी शरीर में प्रवेश कर जाते हैं। यह एक ओक्यूपेशनल हाजार्ड हैं। यह उन लोगों को होता है, जो पशुधन के क्षेत्र में कार्य करते हैं।

**ब्रुसेलोसिस रोग के लक्षण–**

**पशुओं में–** पशुओं में गर्भाधान के अन्तिम तीन महीनों में गर्भपात होना इस रोग का मुख्य लक्षण है। गर्भपात के बाद चमड़े जैसा जेर (प्लासेंटा) का बाहर आना इस रोग की खास पहचान है। पशुओं में जेर का रूकना एवं गर्भाशय की सूजन एवं नर पशुओं में अंडकोष की सूजन इस रोग का प्रमुख लक्षण है। नर पशुओं के जोड़ों में सूजन आ जाती है।

**मनुष्यों में–** पशुओं में इस रोग में बुखार आता है जो बार–बार उतरता और चढ़ता रहता है। भूख न लगना, मांसपेशियों, जोड़ों और पीठ में दर्द, थकान आदि। अंडकोष और अंडकोष के क्षेत्र में सूजन मुख्य लक्षण है।

**निदान–** निदान के लिए प्रयोगशाला परीक्षण आवश्यक होते है, संभावित नैदानिक परीक्षण दो तरह के होते है। रोज बंगाल टेस्ट (आरबीटी) और स्टैंडर्ड एग्लूटीनेशन टेस्ट (एसएटी) से इस रोग का निदान होता है।

**उपचार–** इसका उपचार आमतौर पर एंटीबायोटिक दवाओं से किया जाता है जिसमें रिफैम्पिन और डाक्सीसाइक्लिन प्रमुख है।

**रोकथाम–**

- अधिक जोखिम वाले जुनोटिक क्षेत्रों में बोवाइन ब्रूसेलोसिस के नियंत्रण के लिए पशुओं का टीकाकरण करवाना चाहिए।
- नए खरीदे हुए पशुओं को ब्रुसेला संक्रमण की जांच किए बिना दूसरे स्वस्थ पशुओं के साथ में नहीं रखना चाहिए।
- स्वस्थ गाय, भैंसों के बच्चो में 4–8 माह की आयु में ब्रुसेला एस–19 वैक्सीन से टीकाकरण करवाना चाहिए।
- अगर किसी पशु को गर्भकाल के तीसरी तिमाही में गर्भपात हुआ हो तो उसे तुरन्त फार्म के बाकी स्वस्थ पशुओं से अलग कर दिया जाना चाहिए, क्योंकि उसके स्त्राव से अन्य पशुओं में संक्रमण हो सकता है।
- गर्भाशय से बाहर निकले हुए मृत नवजात एवं जैर को चूने के साथ मिलाकर गहरे जमीन के अन्दर गड़े में दबा देना चाहिए ताकि जंगली जानवर उसे फैला ना सके।
- रोगी मादा पशु के कच्चे दूध को स्वस्थ नवजात पशु एवं मनुष्यों को नहीं पिलाना चाहिए।
- ब्याने वाले पशुओं में गर्भपात होने पर पशुपालकों को उनके संक्रमित स्त्राव, मलमूत्र आदि के सम्पर्क से बचना चाहिए।
- आस–पास की धूल, मिट्टी, भूसा, चारा आदि को जला देना चाहिए तथा आस–पास के स्थान को जीवाणु रहित करना चाहिए।
- पशुपालकों, पशुचिकित्सक एवं लैब में कार्य करने वालों को विशेष सावधानी बरतना चाहिए जैसे – रबर के दस्ताने, गाउन या एप्रीन आदि पहनना चाहिए।
- दूध को हमेशा उबालकर इस्तेमाल करना चाहिए। सीधा कच्चे या बिना उबाले हुए दूध से बने उत्पाद जैसे दही, पनीर आदि का उपयोग नहीं करना चाहिए।

**डॉ. देवेन्द्र चौधरी व डॉ. चांदनी जावा**
**वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर**

## सफलता की कहानी

### बकरी पालन में नस्ल संवर्द्धन कर अशवीर सिंह बने सफल व्यवसायी

पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ़ द्वारा प्रशिक्षित श्रीगंगानगर जिले के करणपुर तहसील के निवासी अशवीर सिंह रमाणा ने बकरी पालन व कृत्रिम गर्भाधान कर जिले के युवाओं में से एक सफल बकरी पालक बने हैं। अशवीर सिंह रमाणा पुत्र बलतेज सिंह रमाणा करणपुर तहसील के गांव 6 एफएफ के रहने वाले है। इनकी शैक्षणिक योग्यता बीएसटीसी व एम.ए. है और वर्तमान में बकरी पालन के साथ–साथ पढ़ाई कर रहे हैं। अशवीर सिंह का कहना है कि घर पर पशुपालन का काम देखते–देखते बकरी पालन की इच्छा हुई तो उन्होंने पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ से सम्पर्क कर इसका प्रशिक्षण प्राप्त किया और 15 बरबरी नस्ल की बकरियों से अपना बकरी पालन व्यवसाय प्रारम्भ किया। अशवीर सिंह ने इस दौरान कृत्रिम गर्भाधान का प्रशिक्षण प्राप्त कर बकरी में उन्नत नस्ल का कृत्रिम गर्भाधान भी प्रारम्भ कर दिया और एक वर्ष में ही उनको कृत्रिम गर्भाधान के अच्छे परिणाम आने लगे। अशवीर सिंह कहते है कि बकरी पालन बेरोजगारों के लिए आय का अच्छा साधन है इसको देखकर गांव के अन्य युवाओं ने भी घर पर बकरी पालन के रोजगार को अपनाया है। पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ़ के पशु वैज्ञानिकों की सलाह फोन पर व ऑनलाइन प्रशिक्षण के माध्यम से पशुओं में नियमित टीकाकरण के साथ–साथ आवश्यकतानुसार कर्मीनाशक दवाईयां आदि के बारे में जानकारी साझा करते है, साथ ही इन्होंने अपने फार्म पर अजोला व सहजन के पौधे भी लगा रखे हैं। बकरी पालन से वो कम समय में ही व्यवसाय से अच्छा लाभ अर्जित करने लगे हैं और कृत्रिम गर्भाधान करके अच्छी नस्ल के बच्चे तैयार कर रहे हैं जो कि अन्य पशुपालकों को देकर अच्छा लाभ अर्जित कर रहे हैं।

सम्पर्क–अशवीर सिंह रमाणा, गांव 6 एफएफ, ( श्रीगंगानगर ) 8104617661

**निदेशक की कलम से...**

# गर्मी व बरसात में पशुओं की उचित देखभाल जरूरी

राजस्थान में रेगिस्तानी क्षेत्र राज्य के कुल क्षेत्रफल का 61 प्रतिशत है तथा राजस्थान पशुधन की दृष्टि से एक समृद्ध राज्य है। इस कारण पशुपालन ग्रामीण आजीविका का एक प्रमुख साधन है। वैसे तो बारह महीने पशुओं की देखभाल जरूरी है, परन्तु गर्मी तथा बरसात में पशुओं की विशेष व उचित देखभाल अत्यंत आवश्यक है। भारत जैसी जलवायु वाले देश के लिए पशुओं को खुले में रखने की प्रणाली सबसे उपयुक्त एवं किफायती है, परन्तु गर्मी में तापमान को कम रखने के लिए कुछ ढांचागत बदलाव किये जाने चाहिए। पशुओं के बाड़े के आस–पास छायादार वृक्ष लगाने चाहिए, बाड़ों के अन्दर के तापमान को कम रखने के लिए जूट की बोरियों से बने पर्दे लगाए जाने चाहिए तथा समय–समय पर पानी का छिड़काव भी किया जाना चाहिए। आजकल बाजार में उपलब्ध ग्रीनमेट को भी इस कार्य में उपयोग ले सकते है। पशुओं को गर्मी में होने वाले तनाव व बेचैनी को दूर करने के लिए हरा चारा पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध कराना चाहिए। पशुओं को पीने के लिए पर्याप्त मात्रा में साफ व स्वच्छ पानी देना चाहिए। गर्मी में पशु बीमार हो तो तुरन्त पशुचिकित्सक से सम्पर्क कर इलाज करवाना चाहिए। इसी प्रकार प्रदेश में मानसून का आगमन भी हो चुका है अतः मानसून में भी पशुओं का विशेष ध्यान रखना चाहिए। बरसात का मौसम भले ही छोटा हो परन्तु उचित देखभाल नहीं करने पर पशुओं के स्वास्थ्य एवं सेहत पर बुरा असर पड़ता है। इसलिए मानसून में पशुओं की देखभाल हेतु आवश्यक इंतजाम करने चाहिए। बरसात में चारे के खराब होने की आंशका बढ़ जाती है अतः सूखे चारे को भीगने से बचाना चाहिए। बरसात में प्रदुषित पानी पीने से परजीवियों का प्रकोप भी बढ़ जाता है। इसलिए उचित कृमिनाशक दवा समय पर पशुओं को देवें। बाड़ों से बरसाती पानी के निकासी की भी उचित व्यवस्था हो ताकि पानी एक जगह एकत्रित न हो सके इसके साथ–साथ पशुचिकित्सक के परामर्श पर उचित कृमिनाशक दवा व पशुओं का टीकाकरण अवश्य कराना चाहिए।

**प्रो. (डॉ.) राजेश कुमार धूड़िया,** निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास, बीकानेर

**RAJUVAS e-पशुपालक चौपाल**

।।पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम्।।

माह के प्रत्येक द्वितीय एवं चतुर्थ बुधवार को
समय : दोपहर 12.00 बजे से 1.00 बजे तक

राजुवास के आधिकारिक फेसबुक पेज से सीधा प्रसारण
LIVE https://www.facebook.com/RAJUVASOfficialWebPage

**पशुचिकित्सा सम्बन्धी जानकारी प्राप्त करने के लिए**

**टोल फ्री हैल्पलाईन**

**1800 180 6224**

**"धीणे री बात्यां"**

**पशुपालकों के लिए रेडियो कार्यक्रम**

माह के तीसरे गुरुवार को
सायं 5.30 से 6.00 बजे तक
प्रदेश के 17 आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारण

**मुख्य संपादक**
प्रो. (डॉ.) आर. के. धूड़िया
**संपादक**
डॉ. दीपिका धूड़िया
डॉ. मनोहर सैन
**संकलन सहयोगी**
सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली
**प्रसार शिक्षा निदेशालय**
0151-2200505
email : deerajuvas@gmail.com

पत्रिका में प्रकाशित आलेख/विचार लेखकों के अपने हैं।

बुक पोस्ट

भारत सरकार की सेवार्थ

सेवा में

.......................................................

.......................................................

.......................................................

स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, राजुवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. ( डॉ. ) आर.के. धूड़िया द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर, राजस्थान से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, बिजेय भवन पैलेस, राजुवास, बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : प्रो. ( डॉ. ) आर.के. धूड़िया